Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper- IV
Date:- 15-10-20
Do- Next class

Gestalt Psychology

Contribution of The Field of Learning

(3) चिन्तन (Thinking):- सीखने के प्रति

गेस्टाल्टवादियों के जो विचारधारा थे उसका उपयोग चिन्तन (Thinking) के अध्ययन के क्षेत्र में भी किया गया। वर्दाइमर ने छोटे-छोटे बच्चों को विभिन्न तरह के ज्यामितीय समस्या को देकर उनके चिन्तन का अध्ययन किया और उनके द्वारा किये गए प्रयोगों को एक पुस्तक प्रोडक्टिव थिंकिंग (Productive Thinking) में प्रकाशित किया। सचमुच में, वे बच्चों द्वारा किये गए सर्जनात्मक चिन्तन की व्याख्या सीखने के गेस्टाल्टवादी नियमों का उपयोग करके किये। चिन्तन के अध्ययन में गेस्टाल्टवादियों को उर्जबर्ग स्कूल से प्रेरणा मिली। वर्दाइमर का मत था कि चिन्तन का अध्ययन समग्रता (whole) के रूप में किया जाना चाहिए। किसी समस्या के समाधान पर चिन्तन करते समय व्यक्ति को परिस्थिति के बारे में समग्र रूप से (as a whole) ध्यान रखना चाहिए न कि उसके विस्तृत (details) में खो जाना चाहिए। व्यक्ति को कोई भी कदम आँख मूँदकर नहीं उठाना चाहिए था समस्या के समाधान में समग्रता (whole) से अंश (part) की ओर ही बढ़ना चाहिए। इनका मत था कि समस्या के समाधान पर चिन्तन करते समय जो त्रुटियाँ होती हैं (अर्थात् ऐसे त्रुटि होते हैं जिससे समस्या के समाधान में कुछ मिलती है) न कि थॉर्नडाइक की बिल्ली

Scanned with CamScanner

के समान अंध त्रुटियाँ (blind errors) होती है। वर्दाइमर ने यह स्पष्ट किया कि चिन्तन में प्रयास एवं त्रुटि (trial-and error) का स्थान नहीं होता है। उनके लिए चिन्तन हमेशा लक्ष्य निर्देशित (goal Directed) एवं सुझपूर्ण होता है। इसमें एक नया गेस्टाल्ट (gestalt) की उत्पत्ति होती है। कुछ अन्य गेस्टाल्टवादी जैसे डंकर (Duncker) 1945, मायर (Maier, 1930-1931) ने भी अपने प्रयोगों से यह स्पष्ट किया कि चिन्तन सुझपूर्ण होता है तथा इसमें प्रत्यक्षणात्मक क्षेत्र की संरचना में परिवर्तन होता है।

वर्दाइमर ने चिन्तन के तीन प्रकार बतलाये हैं- a, b तथा y। 'a' प्रकार का चिन्तन उत्पादक चिन्तक (Productive thinking) को कहा जाता है जिसमें व्यक्ति का संबंध निर्यात्मक समस्याओं से होता है तथा जिसमें समूहन (grouping) पुनर्संगठन (reorganization) तथा महत्वपूर्ण विशेषताओं का खोज आदि की प्रक्रियाएँ प्रधान होती हैं। 'b' प्रकार के चिन्तन अंशतः उत्पादक (Productive) तथा अंशतः अनुत्पादक एवं यांत्रिक (Mechanical) होता है।

वर्दाइमर के अनुसार उत्पादक चिन्तक (Productive thinking) में विकेन्द्रीकरण (centering) तथा पुनर्केन्द्रीकरण (recentering) की प्रक्रिया देखने को मिलती है। केन्द्रीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति के चिन्तन में (transfer) होता पाया जाता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति परिस्थितियों को समग्र रूप से एवं वस्तुनिष्ठ परिप्रेक्ष्य (objective perspective) में प्रेक्षण करता है। पुनर्केन्द्रीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति के चिन्तन में परिस्थिति के बारे में व्यक्तिगत या आत्मनिष्ठ विचार से अनासक्त विचार (detached-view) की ओर अंतरण (transfer) हो पाया जाता है। पुनर्केन्द्रीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति परिस्थिति को एक नया एवं बेगी (Penetrating) विचार से देखता एवं समझता है। वर्दाइमर ने समस्या समाधान में पुनरावृत्ति (repetition) के महत्व को अस्वीकार कर दिया है। इन्होंने यह चेतावनी दी है कि यांत्रिक पुनरावृत्ति के सतत उपयोग से प्राणी में यांत्रिक क्रियाएँ (Mechanical activities) तथा अंध आदतों (blind habits) के निर्माण होने की सम्भावना तीव्र हो जाती है।

Next class

Scanned with CamScanner